BA-I
Paper - I
Unite - 7

Date
09/09/2020

Page-1

Dr. Raj Gopal
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar

Nayaya: Inference (Lecture-4)

न्याय : अनुमान प्रमाण (व्याख्यान -4)

अनुमान के प्रकार :- न्याय दर्शन में अनुमान का वर्गीकरण विभिन्न दृष्टिकोण से किया गया है। प्रयोजन के दृष्टिकोण से अनुमान के दो भेद किये गये हैं - (i) स्वार्थानुमान (ii) परार्थानुमान

(i) स्वार्थानुमान :- जब मनुष्य स्वयं निजी ज्ञान की प्राप्ति के लिये अनुमान करता है तब उस अनुमान को स्वार्थानुमान कहते हैं। इस अनुमान में वाक्यों को क्रम से रखने की आवश्यकता नहीं होती है। इसमें केवल तीन ही पद होते हैं पक्ष, साध्य और हेतु। जैसे पहाड़ पर धुएँ को देखकर वहाँ आग का अनुमान। इस अनुमान का आधार हमारा पहले का अनुभव है। जहाँ जहाँ धुआँ को देखा है वहाँ वहाँ आग को पाया है। इसीलिये धुआँ और आग के बीच आवश्यक संबंध हमारे मन में स्थापित हो गया है। इसी संबंध के आधार पर धुएँ को देखकर आग का अनुमान करते हैं।

(ii) परार्थानुमान :- यह अनुमान दूसरे के निमित्त किया जाता है। जब हम दूसरे की शंका को दूर करने के लिए अनुमान का सहारा लेते हैं तो उस अनुमान को परार्थानुमान कहते हैं। परार्थानुमान में पाँच अवयवों की आवश्यकता होती है। इसलिये इस अनुमान को पंचावयव अनुमान कहा जाता है। इस अनुमान के पाँच अंग निम्न हैं -

Scanned with CamScanner

पहाड़ पर आग है। - प्रतिज्ञा
क्योंकि वहाँ धुआँ है। - हेतु
जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ आग रहती है जैसे रसोईघर में - उदाहरण
पहाड़ में धुआँ है - उपनय
इसलिए पहाड़ पर आग है - निगमन

स्वार्थानुमान एवं परार्थानुमान में मुख्य अंतर यह है कि स्वार्थानुमान में तीन वाक्यों की आवश्यकता होती है, परन्तु परार्थानुमान में पाँच वाक्यों की आवश्यकता होती है। स्वार्थानुमान पहले आता है परार्थानुमान बाद में आता है। परार्थानुमान का आधार स्वार्थानुमान है। यह स्वार्थानुमान का विधिवत अभिव्यक्ति है।

न्याय दर्शन में परार्थानुमान का अधिक महत्व है। इसी के सहारे हम दूसरे के सामने किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। गौतम के तर्कशास्त्र का यह अनमोल अंग है। प्राचीन न्याय के अनुसार अनुमान के तीन प्रकार माने गये हैं। वे हैं।

अनुमान

- पूर्ववत्
- शेषवत्
- सामान्यतोदृष्ट